दहेज प्रथा

(पुस्तक के कुछ अंश)

देखो जी अब हमारी बिटिया बड़ी हो गई है, कितनी सुंदर दिखने लगी है, कल तक जिसकी तोतली आवाज हमको हंसाती थी और मिश्री सी मीठी बोली पर हम फूले नहीं सिहाते थे, आज कैसे शर्माने लगी है। माँ ने अंजली की तरफ प्यार से देखते हुए कहा। पर आज यशोदा के इन शब्दों ने उसके पति हरिओम के माथे पर चिंता की लकीरें बढा दीं थीं । पड़ोसी के छुट्टन की बेटी का सिक्का देकर सीधा जो घर आ रहा था, देखा था किस तरह लड़के वालों ने मोटरगाड़ी के साथ साथ पचास हजार रूपये की मांग कर दी थी, घर का सारा सामान जो दिया था सो अलग। पंद्रह हजार रूपये की पगार में छुट्टन ने पूरा दो लाख 10 रु सैकड़े की ब्याज गाँव के ही सूदखोर भगत जी से घर गिरवीं रख कर जो शादी की थी, बेटी की। आगे............

देखो जी अब हमारी बिटिया बड़ी हो गई है, कितनी सुंदर दिखने लगी है, कल तक जिसकी तोतली आवाज हमको हंसाती थी और मिश्री सी मीठी बोली पर हम फूले नहीं सिहाते थे, आज कैसे शर्माने लगी है। माँ ने अंजली की तरफ प्यार से देखते हुए कहा। पर आज यशोदा के इन शब्दों ने उसके पति हरिओम के माथे पर चिंता की लकीरें बढा दीं थीं । पड़ोसी के छुट्टन की बेटी का सिक्का देकर सीधा जो घर आ रहा था, देखा था किस तरह लड़के वालों ने मोटरगाड़ी के साथ साथ पचास हजार रूपये की मांग कर दी थी, घर का सारा सामान जो दिया था सो अलग। पंद्रह हजार रूपये की पगार में छुट्टन ने पूरा दो लाख 10 रु सैकड़े की ब्याज गाँव के ही सूदखोर भगत जी से घर गिरवीं रख कर जो शादी की थी, बेटी की।

अब पिता को भी आभास होने लगा था कि उसकी बेटी अंजली बड़ी होने लगी है , आज माँ के साथ काम में हाथ बँटाने से लेकर पिता के खाने का ख्याल , धूप में पिता को काम करते देख कैसे उसके सिर पर अंगोछा आ जाता था, राकेश औऱ मोहन दोनो बेटे अंजली से बड़े थे, पर बेटों से ज्यादा बेटी को परिवार, पिता औऱ माँ की चिंता रहती थी। पिता को भी अंजलि अपनी सारी सन्तानो में सर्वाधिक प्रिय थी, आखिर इतने गुण जो थे उसकी लाड़ली बेटी में, कैसे पिता और मां का ख्याल रखती थी। कैसे खर्च चलाना है, कैसे बच्चों की पढ़ाई की फीस देनी है, किस दुकान पर कौन सा राशन सस्ता मिलता है सब जानकारी जो थी अंजली को। बेटी के इन छोटी छोटी जिम्मेदारियों ने पिता के कन्धों से जिम्मदारियों का बोझ बहुत हल्का कर दिया था, और उसके रहते पिता को किसी बात की चिंता भी तो नहीं रहती थी, पर आज जसोदा के शब्दों ने जैसे हरिओम को नींद से जगा दिया था उसे पिता होने की जिम्मेदारी का अहसास जो करा दिया था।

उसके सामने आज समाज के दो चेहरे नजर आते थे। एक तरफ बेटी की शादी के बाद छुट्टन की माली हालत उसे परेशान करते थी और दहेज के लिए दो लाख के कर्ज की चिंता जो छुट्टन के माथे की लकीरें खिंच गई थी उसके दिल को बैठाती थी तो दूसरी तरफ समाज के लोगों की वाह वाही उसे ललचाती थी जो यह कहते न थकते थे कि बेशक छुट्टन गरीब है पर दिल से बड़ा अमीर है पर बड़े धूम धाम से शादी रचाई है बेटी की। इस कशमकश में हरिओम को यह निर्णय करना मुश्किल हो रहा था कि वह समाज और दहेज के लोभियों को खुश करने के लिए आज कर्ज लेकर बेटी की शादी धूमधाम से करे या कोई अच्छा लड़का देखकर कोर्ट में 2000/- रूपये वकील को देकर बेटी की शादी कर कोर्ट में ही उसके हाथ पीले करा दे। पर कौन लड़का इस तरह राजी होगा , अगर कोई सज्जन लड़का मिल भी गया तो ये समाज क्या कहेगा, इसी कशमकश में कब

हरिओम को नींद आ गई और कब उसी पेड़ की छांव में सो गया पता ही नहीं चला। आज हरिओम जिस बेटी को सबसे ज्यादा प्यार करता था, आज वही बेटी उसकी दुविधा कारण हो गई थी। पता नहीं कौन जिम्मेदार था इस कशमकश का - हरिओम की माली हालत , इस समाज के बनाये नियम, यह समाज या उसकी बेटी?